संपादकीय

प्रिय पाठको! जुलाई माह हमारे लिए विशेष है क्योंकि 29 जुलाई 2023 को *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के लागू होने की तीसरी वर्षगाँठ मनाई गई। इन तीन सालों में भारत ने एक समतापूर्ण एवं जीवंत ज्ञान समाज में बदलने हेतु *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं पर आधारित बुनियादी स्तर की *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022* के साथ-साथ कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, जो शिक्षा से संबंधित समस्त हितधारकों के लिए उत्साह एवं खुशी की बात है। इन्हीं प्रयासों के क्रियान्वयन, समीक्षा व सरोकारों के कुछ अंशों को यह अंक लेखों एवं शोध-पत्रों के रूप में प्रस्तुत करता है।

बच्चों के सार्थक एवं समग्र विकास के लिए उन्हें उचित शिक्षण की आवश्यकता होती है। ऐसा शिक्षण, जो मनोरंजक विधियों द्वारा प्रदान किया जाए जिसे बच्चे सहजता से एवं आनंद के साथ सीख सकें। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए 'खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र' को सीखने-सिखाने में एक उपयोगी उपकरण माना गया है। इसी पर आधारित लेख 'खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र की बच्चों के समग्र विकास में भूमिका' पत्रिका में प्रस्तुत किया गया है। इस लेख में बच्चों को खेल-खेल में सिखाने पर बल दिया गया है।

बच्चों में तार्किक क्षमता एवं चिंतन प्रक्रिया का विकास होना बहुत आवश्यक है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में बच्चों में सृजनात्मकता और समीक्षात्मक सोच को प्रबल करने पर बल दिया गया है। इसी पर आधारित 'अनुमान लगाना—पठन-पाठन की एक मूल्यवान युक्ति' लेख इस अंक में शामिल किया गया है, जिसमें अनुमान लगाकर पढ़ने की विशेषताओं को उजागर किया गया है। साथ ही इस बिंदु पर प्रकाश डाला गया है कि अनुमान लगाकर पढ़ने से बच्चों में कल्पना करने की क्षमता का विकास भी होता है।

शिक्षा प्राप्त करना प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है, लेकिन आज भी महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें जेंडर-आधारित हिंसा प्रमुख रूप से विद्यमान है। शिक्षण संस्थानों में एवं वहाँ आते-जाते हुए उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है, जिससे उन्हें शिक्षा प्राप्त करने में सुरक्षा की कमी अनुभव होती है। इसी मुद्दे को उजागर करते हुए 'शिक्षण संस्थानों में जेंडर आधारित हिंसा एवं सुरक्षा के सार्थक समाधानों पर विश्लेषण' लेख में शिक्षण संस्थानों के भीतर छात्राओं, विशेषकर महिलाओं द्वारा अनुभव की जाने वाली हिंसा के विभिन्न रूपों पर चर्चा की गई है। इसमें शैक्षणिक संस्थानों में जेंडर असमानता और जेंडर भेदभाव सहित जेंडर आधारित हिंसा में योगदान देने वाले कारकों तथा उनके उपयुक्त समाधानों पर प्रकाश डाला गया है।

समस्त विश्व में दिन-प्रतिदिन डिजिटल प्रौद्योगिकी का विकास हो रहा है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) का विशेष स्थान है। इसके बढ़ते उपयोग के कारण व्यक्ति के स्थान पर मशीनों का उपयोग अधिक होने लगा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी इसकी भूमिका बढ़ने लगी है।

विद्यालयी शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के पाठ्यक्रमों में इसके सार्थक समावेशन की आवश्यकता को देखा जा रहा है। ऐसे में शिक्षा के क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित *चैटजीपीटी* जैसे चैटबोट का महत्व काफी बढ़ जाता है, क्योंकि इसका तर्कपूर्ण उपयोग शिक्षा के कई स्तरों पर आने वाली समस्याओं को कम कर सकता है। इसी पर आधारित लेख 'शिक्षा में बढ़ता आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित भाषा मॉडल चैटजीपीटी का प्रयोग—संभावनाएँ और चुनौतियाँ' पत्रिका में शामिल किया गया है।

कक्षा में किसी भी विषय को पढ़ाने के लिए शिक्षक को कक्षा पूर्व कुछ विशेष तैयारी करनी चाहिए, जिससे शिक्षण-अधिगम में बाधा उत्पन्न न हो पाए। इसलिए इंटर्नशिप के दौरान विद्यार्थी-शिक्षकों को शिक्षण से पूर्व आवश्यक तैयारी करनी चाहिए। इसी पर केंद्रित 'विज्ञान शिक्षण हेतु अध्यापकों की तैयारी' लेख, इस अंक में दिया गया है, क्योंकि विज्ञान एक प्रयोग आधारित विषय है। इसलिए विज्ञान-शिक्षण के दौरान आस-पास के परिवेश पर आधारित गतिविधियों को कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में स्थान दिया जाना चाहिए।

भाषा व्यक्ति के जीवन को संचालित करती है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपनी प्रतिदिन की आवश्यकताओं को तो पूर्ण करता ही है, साथ ही ज्ञान का आदान-प्रदान भी करता है। बच्चे अपनी मातृभाषा अथवा स्थानीय भाषा द्वारा ही सर्वप्रथम अपने आस-पास के परिवेश के बारे में सीखते हैं तथा उसी भाषा में उनका सीखना-सिखाना आरंभ होता है, क्योंकि बच्चे अपनी मातृभाषा में सहजता से सीखते हैं। शोध-पत्र 'सीखने-सिखाने के एक संसाधन के रूप में विद्यार्थियों की भाषायी विविधता' इसी पर आधारित है। इसमें एक ही कक्षा में अनेक भाषाओं को बोलने वाले विद्यार्थियों की भाषिक विविधता की विशेषताओं को प्रस्तुत किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षण-अधिगम नवाचारों एवं रचनात्मक विधियों के माध्यम से करने पर बल दिया गया है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'विद्यार्थियों की अंग्रेजी व्याकरण की उपलब्धि पर रचनावादी शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता' दिया गया है। यदि विद्यार्थी-शिक्षकों को रचनावादी शिक्षण-विधियों (5 ई मॉडल, सहकारी एवं सहयोगी अधिगम आदि) की सहायता से प्रशिक्षित किया जाए, तो भावी शिक्षक अपनी कक्षा में रचनावादी शिक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों को प्रभावी ढंग से पढ़ा सकेंगे।

वर्तमान युग सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का युग है। आज ई-संसाधनों का उपयोग कर ऑनलाइन शिक्षण करना सरल हो गया है, किंतु ऑनलाइन शिक्षण में अनेक कठिनाइयाँ हैं, विशेषकर हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों एवं विद्यार्थी-शिक्षकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसी पर आधारित शोध-पत्र 'ऑनलाइन शिक्षण में हिंदी माध्यम के विद्यार्थी-शिक्षकों की कठिनाइयाँ एवं समाधान' में इन्हीं समस्याओं एवं उनके समाधानों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। शोध-पत्र में दिए गए समाधानों से हिंदी माध्यम के विद्यार्थी-शिक्षक भी सरलता एवं सहजता से ऑनलाइन शिक्षण कर सकेंगे।

समाज के विकास में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसलिए शिक्षा में समय-समय पर नई

परिस्थितियों के अनुकूल परिवर्तन होना आवश्यक है, जिससे ज्ञान के नए क्षेत्रों का विकास संभव हो सके। इसी परिप्रेक्ष्य में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का निर्माण किया गया। इस शिक्षा नीति पर शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के विचारों पर आधारित शोध-पत्र '*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के प्रति विश्वविद्यालयी शिक्षकों एवं शोधार्थियों का दृष्टिकोण' प्रस्तुत किया गया है। इस शोध-पत्र में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दी गई विविध अनुशंसाओं पर उनके विचारों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

बच्चों में ज्ञान, तार्किक क्षमता, चिंतन, कल्पना आदि का विकास करना आवश्यक है। एक अच्छा अध्यापक वही है, जो समस्त संसाधनों का उपयोग कर, विविध गतिविधियों एवं शैक्षिक पद्धतियों का उपयोग कर कक्षा में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बेहतर ढंग से संचालित कर सके। साथ ही, जो बच्चों को सोचने एवं प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करें तथा उन्हें अनुभव आधारित शिक्षण प्रदान कर सकें। इसी पर आधारित पुस्तक समीक्षा '*मेरी ग्रामीण शाला की डायरी*' को इस अंक में शामिल किया गया है। इस पुस्तक समीक्षा में लेखिका ने अपने शिक्षण के दौरान हुए अनुभवों को साझा किया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध-पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

प्यारे बच्चो!

यदि कोई आपको अनुचित ढंग से स्पर्श करे और यह स्पर्श आपको अच्छा न लगे तो आप चुप न रहें। आप—

1. स्वयं को इसका दोष न दें;
2. इस बारे में किसी ऐसे व्यक्ति को बताएँ जिस पर आप भरोसा करते हो;
3. आप **पॉक्सो ई.बॉक्स** के माध्यम से राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग को भी इस बारे में सूचित कर सकते हैं।

जब आपको कोई अनुचित ढंग से स्पर्श करता है तो आपको बुरा लग सकता है, आप दुविधाग्रस्त और असहाय अनुभव कर सकते हैं
आपको "बुरा" अनुभव करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि आपकी गलती नहीं है

इस बटन को दबाएँ

पॉक्सो ई.बॉक्स NCPCR@gov.In पर उपलब्ध है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

यदि आपकी आयु 18 वर्ष से कम है और आप मुसीबत में हैं अथवा दुविधाग्रस्त हैं अथवा आपके साथ दुर्व्यवहार किया गया है अथवा संकट में हैं अथवा किसी ऐसे बच्चे को जानते हैं...

1098 पर कॉल करें...क्योंकि कुछ अच्छे नंबर जीवन बदल देते हैं।

चाइल्ड लाइन 1098 - विपत्ति में बच्चों के लिए 24 घंटे निःशुल्क राष्ट्रीय आपातकालीन फ़ोन सेवा, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के सहयोग से चाइल्ड लाइन इंडिया फ़ाउंडेशन की पहल है।

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर